Universal Journal of Academic Research (UJAR)
Peer Reviewed and Refereed Journal, ISSN NO. XXXX-XXX
Available Online:https://ujarjournal.com/archives/

तकनीक एवं सोशल मीडिया का परिवार पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (भारतीय समाज के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रानू वर्मा
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभागशासकीय कन्या महाविद्यालय, मध्य प्रदेश

Abstract
आधुनिक समाज में तकनीक का प्रभाव सभी क्षेत्रों में वृहत मात्रा में देखने को मिलता है यदि वर्तमान युग को तकनीकी युग कहा जाए यो यह अतिशयोक्ति नहीं होगा यहाँ तक की वर्तमान समय में तकनीक और सोशल मीडिया मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं।सर्वविदित है कि परिवार समाज की आधारभूत सामाजिक संस्था है जहाँ व्यक्ति का सामाजीकरण,, भावनात्मक विकास और नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है निश्चित रूप में तकनीक और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने पारिवारिक जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया है।जहाँ एक ओर तकनीक ने पारिवारिक सदस्यों के बीच संपर्क को सरल बनाया है वहीं दूसरी ओर इसने पारिवारिक संवाद में कमी, भावनात्मक दूरी और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। इस शोध पत्र में तकनीक एवं सोशल मीडिया के परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है तथा संतुलित तकनीकी उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया है।
Keywords: तकनीक, सोशल मीडिया, परिवार, डिजिटल संचार, पारिवारिक संबंध, भारतीय समाज, समाजशास्त्र

1. प्रस्तावना

21वीं सदी में तकनीक एवं सोशल मीडिया के उद्भव ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। परिवार, जो समाज की मूलभूत इकाई है, इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा। भारतीय समाज में परिवार की जो परंपरागत संरचना और मूल्य प्रणाली रही है, उसमें तकनीक के कारण अभूतपूर्व परिवर्तन देखे जा रहे हैं।

मनोरंजन अब परिवार के प्रत्येक सदस्य के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। आज ऐसा परिवार मिलना कठिन है जहाँ तकनीक की उपस्थिति न हो।परिवार को सामाजिक संरचना की आधारशिला माना गया है। यही वह संस्था है जहाँ व्यक्ति के समाजीकरण का शुभारंभ होता है।मानवीय अंतःक्रिया के लिए भाषा, संस्कृति, नैतिकता, अनुशासन, भावनात्मक नियंत्रण और सामाजिक भूमिकाओं की शिक्षा सबसे पहले परिवार में ही दी जाती है। भारतीय समाज में परिवार का महत्व केवल सामाजिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और भावनात्मक भी रहा है।

भारत वर्ष में पाए जाने वाले संयुक्त परिवारों में बुजुर्गों का सम्मान एक दूसरे के लिए समर्पण की भावना सुख - दुख में एकजुट होकर रहना , सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता और पारस्परिक सहयोग भारतीय पारिवारिक जीवन की पहचान रहे हैं किन्तु आधुनिक समय में तकनीकी विकास, विशेष रूप से सूचना एवं संचार तकनीक (ICT) और सोशल मीडिया के विस्तार ने पारिवारिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, वीडियो कॉल, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डिजिटल

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो तकनीक को सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में देखा जा सकता है। यह न केवल सामाजिक संस्थाओं के कार्यों को बल्कि उनके स्वरूप और मूल्यों को भी प्रभावित करती है। परिवार भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा है। तकनीक ने जहाँ एक ओर परिवार के सदस्यों को भौगोलिक दूरी के बावजूद जोड़ने का कार्य किया है वहीं दूसरी ओर इसने भावनात्मक दूरी, व्यक्तिवाद, पीढ़ीगत संघर्ष और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं।

2. तकनीक की अवधारणा एवं सामाजिक भूमिका

तकनीक समाज में परिवर्तन लाने वाली एक शक्तिशाली शक्ति है। इसने न केवल उत्पादन प्रणाली को बदला है, बल्कि सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और जीवन-शैली को भी पुनर्गठित किया है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण से, तकनीक उत्पादन के साधनों का हिस्सा है जो सामाजिक संरचना को प्रभावित करती है।

3. सोशल मीडिया: अर्थ एवं विशेषताएँ

सोशल मीडिया वे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हैं जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री बनाने, साझा करने और एक-दूसरे के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाते हैं। फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म आज भारतीय समाज में गहरी पैठ बना चुके हैं।

4. पारिवारिक संरचना पर प्रभाव

4.1 संयुक्त से नाभिकीय परिवार की ओर

तकनीकी विकास और शहरीकरण ने भारतीय परिवार की संरचना को संयुक्त से नाभिकीय (Nuclear) परिवार की ओर धकेला है। रोजगार के लिए शहरी पलायन, जिसे तकनीकी विकास ने बढ़ावा दिया है, ने संयुक्त परिवारों को भौगोलिक रूप से बिखेर दिया है।

4.2 माता-पिता और बच्चों के संबंध

डिजिटल युग में माता-पिता और बच्चों के संबंध में एक नया तनाव उभरा है। बच्चे डिजिटल दुनिया में इतने डूब जाते हैं कि माता-पिता से उनकी बातचीत कम होती जा रही है। साथ ही, माता-पिता बच्चों की ऑनलाइन गतिविधियों की निगरानी को लेकर चिंतित रहते हैं।

4.3 दांपत्य जीवन पर प्रभाव

सोशल मीडिया ने दांपत्य जीवन में नई जटिलताएं जोड़ी हैं। एक ओर, व्हाट्सएप और वीडियो कॉलिंग ने दूरी में रहने वाले जोड़ों को जोड़े रखा है। दूसरी ओर, सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताना, पुराने परिचितों से संपर्क और ऑनलाइन गोपनीयता दांपत्य संबंधों में तनाव और अविश्वास का कारण बन सकती है।

5. समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण के अनुसार तकनीक ने परिवार के कुछ पारंपरिक कार्यों को बदला है। परिवार की सामाजिकरण की भूमिका अब सोशल मीडिया के साथ साझा हो गई है।

संघर्ष सिद्धांत यह दर्शाता है कि तकनीक ने परिवार के भीतर सत्ता और संसाधनों के वितरण को प्रभावित किया है। जो परिवार के सदस्य तकनीक में दक्ष हैं, वे अधिक सशक्त हैं।

6. सुझाव एवं समाधान

पारिवारिक समय की पुनर्स्थापना: परिवार को प्रतिदिन कुछ समय ऐसा निर्धारित करना चाहिए जहाँ तकनीकी उपकरणों का प्रयोग न किया जाए। भोजन के समय, पारिवारिक चर्चाओं और त्योहारों के दौरान प्रत्यक्ष संवाद को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

डिजिटल साक्षरता का विकास: परिवार के सभी सदस्यों, विशेष रूप से बुजुर्गों को तकनीक के उपयोग के प्रति प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे स्वयं को पारिवारिक संवाद से अलग न महसूस करें।

बच्चों के लिए मार्गदर्शन: माता-पिता को बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर निगरानी रखने के साथ-साथ उन्हें इसके सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों की समझ भी देनी चाहिए।

7. निष्कर्ष

इस शोध-पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि तकनीक एवं सोशल मीडिया का परिवार पर प्रभाव बहुआयामी और जटिल है। तकनीक ने परिवार को जोड़ने, सशक्त बनाने और आधुनिक समाज में टिके रहने के नए साधन प्रदान किए हैं लेकिन साथ ही इसने पारंपरिक मूल्यों, संवाद और भावनात्मक निकटता को चुनौती भी दी है।

अतः यह कहा जा सकता है कि तकनीक एवं सोशल मीडिया परिवार के शत्रु नहीं हैं बल्कि वे ऐसे उपकरण हैं जिनका विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग पारिवारिक जीवन को समृद्ध बना सकता है।

संदर्भ सूची

- आहूजा राम ,समाजशास्त्र, जयपुर रावत पब्लिकेशन्स, 2016.
- सिंह योगेन्द्र, आधुनिक भारतीय समाज,नई दिल्ली ,रावत पब्लिकेशन्स, 2014.
- शर्मा रामनाथ, भारतीय समाज की संरचना, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2015.
- दुबे एस.सी. भारतीय समाज,नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2013.
- मिश्र के.एन. समाजशास्त्रीय सिद्धांत, वाराणसी,चौखंभा प्रकाशन, 2017.